सूरह — एक कहानी

सूरह अल-हश्र

जिला-वतनी

पूरा सफ़र — गिरे क़िले, बे-ग़रज़ दिल, ख़ूबसूरत नाम —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 59 • 24 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

हुवल्-लज़ी अख़्रजल्-लज़ीन कफ़रू मिन अह्लिल्-किताबि मिन दियारिहिम लि-अव्वलिल्-हश्र

2. वही है जिसने अहल-ए-किताब के काफ़िरों को उनके घरों से पहले हश्र के वक़्त निकाला।

कै ला यकून दूलतम्-बैनल्-अग़्निया-इ मिन्कुम

7. ताकि वो (माल) तुम्हारे अमीरों के दरमियान ही न घूमता रहे।

व मा आताकुमुर्-रसूलु फ़-ख़ुज़ूहु व मा नहाकुम 'अन्हु फ़न्तहू

7. और रसूल तुम्हें जो दें उसे ले लो, और जिस से रोकें उस से रुक जाओ।

व यु'सिरून 'अला अन्फ़ुसिहिम व लौ कान बिहिम ख़सासह

9. और वो दूसरों को अपने आप पर तरजीह देते हैं, चाहे ख़ुद उन्हें ज़रूरत हो।

या अय्युहल्-लज़ीन आमनुत्तकुल्-लाह वल्-तन्ज़ुर नफ़्सुम्-मा क़द्दमत लि-ग़द

18. ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो, और हर जान देखे कि उसने कल के लिए क्या आगे भेजा।

लहुल्-अस्मा-उल्-हुस्ना

24. उसी के लिए सबसे ख़ूबसूरत नाम हैं।

पहला इज्तिमा

बेटा, ये सूरह मदीना के बाहर के एक असली मंज़र पर खुलती है — और इब्ने अब्बास (रज़ि0) इसे सिर्फ़ 'सूरह बनू नज़ीर' कहा करते थे, क्योंकि ये उनकी कहानी आसमान की अपनी खिड़की से सुनाती है।

बनू नज़ीर मदीना के क़रीब बसी अहल-ए-किताब की एक ताक़तवर क़ौम थी, मुसलमानों से अमन के एक मुआहदे से बँधी हुई। मगर **मुआहदे काग़ज़ पर जीने से पहले दिलों में जीते हैं।** जब नबी ﷺ एक बार उनके मोहल्ले में तशरीफ़ लाए और एक दीवार के पास बैठे, उन्होंने एक मंसूबा फुसफुसाया: ऊपर से उन पर एक चक्की का पत्थर गिरा दो। अल्लाह ने अपने रसूल को इत्तिला दी; आप ﷺ सुकून से उठे और

चले गए — और मुआहदा उनकी अपनी ग़द्दारी से टूट चुका था।

नतीजा जिला-वतनी थी — '**लि-अव्वलिल्-हश्र**', पहले इज्तिमा पर। और क़ुरआन उसकी हैरत को जमा देता है: '**वही** है जिसने अहल-ए-किताब के काफ़िरों को उनके घरों से पहले इज्तिमा पर निकाला। **तुम** ने गुमान भी न किया था कि वो निकलेंगे — और **वो** समझते थे कि उनके **क़िले** उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे। मगर अल्लाह उन पर **वहाँ से आया जहाँ से उन्हें गुमान भी न था**, और उनके दिलों में **रुअ्ब** डाल दी — तो उन्होंने अपने घर **अपने ही हाथों** और मोमिनीन के हाथों उजाड़ दिए। **फ़'तबिरू, या उलिल्-अब्सार** — तो इबरत लो, ऐ नज़र वालो!'

सबसे अजीब तफ़सील ग़ौर कीजिए, बेटा: किसी बड़ी जंग का ज़िक्र नहीं। **क़िला अंदर से गिरा** — रुअ्ब, दिल में दहशत, ने वो ढा दिया जिसे दीवारें बचाने के लिए बनाई गई थीं। जब अल्लाह किसी क़िले को खोलना चाहते हैं, तो वो हमेशा लश्कर नहीं भेजते; कभी वो बस उसके अंदर की हिम्मत बुझा देते हैं।

अल्लाह के मुक़ाबले में क़िले

एक लम्हा दरमियानी लाइन पर ठहरिए, बेटा, क्योंकि ये सूरह का पहला जौहर है: '**वो समझते थे कि उनके क़िले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे।**' दुश्मनों के मुक़ाबले में, दीवारें काम आती हैं। चोरों के मुक़ाबले में, ताले काम आते हैं। **अल्लाह के मुक़ाबले में — कभी कुछ काम नहीं आया, और कभी कुछ काम नहीं आएगा।**

और हर नस्ल, बेटा, बनू नज़ीर के क़िले नए सामान से दोबारा बनाती है: वो बैंक बैलेंस जो सरगोशी करता है 'तुम महफ़ूज़ हो', वो ताल्लुक़ात, वो डबल इंश्योरेंस, वो 'जमा-जमाया' करियर, वो ताक़तवर रिश्तेदार। अच्छे **औज़ार**, ये सब — इस्लाम ऊँट बाँधने का हुक्म देता है — मगर **औज़ार, ख़ुदा नहीं**। बीमारी उस दिन शुरू होती है जब दिल ख़ामोशी से अपना भरोसा **दीवार के रब** से **दीवार** की तरफ़ मुंतक़िल कर देता है।

इस सूरह की शुरुआत उस मुंतक़िली के ख़िलाफ़ उम्र-भर का टीका है: 'अल्लाह उन पर वहाँ से आया जहाँ से उन्हें गुमान भी न था।' **अपनी दीवारें रखिए, बेटा — और

अपना तवक्कुल उन से बाहर रखिए।**

माल सिर्फ़ अमीरों में न घूमे

पीछे छोड़ी गई ज़मीनों और जायदादों ने एक सवाल खड़ा किया: बिना जंग के हासिल होने वाला माल — **फ़य्अ** — कैसे तक़सीम हो? और इसका जवाब देते हुए, अल्लाह ने एक ऐसा उसूल रखा जिस की तरफ़ माशियात-दान सदियों बाद लड़खड़ाते हुए पहुँचे: फ़य्अ अल्लाह और उसके रसूल का है, रिश्तेदारों, यतीमों, मोहताजों और मुसाफ़िरों का — '**कै ला यकून दूलतम्-बैनल्-अग़्निया-इ मिन्कुम**' — **ताकि माल तुम्हारे अमीरों के दरमियान ही घूमता न रहे।**

इसे दो बार पढ़िए, बेटा। चौदह सदियों पहले, एक क़बाइली जिला-वतनी के बीच, क़ुरआन ने हर तहज़ीब की बीमारी का नाम ले दिया: **पैसा उन्हीं चंद हाथों के गिर्द चक्कर काटता रहे जब कि अक्सरियत देखती रहे।** ज़कात, सदक़ा, विरासत के हिस्से, फ़य्अ — दीन का पूरा माशी डिज़ाइन अमीरों के तालाबों से ग़रीबों के खेतों तक **नालें खोदता** रहता है।

और इसी सिलसिले में वो आयत है जिसे उलमा पूरे दीन की एक बुनियाद कहते हैं: '**व मा आताकुमुर्-रसूलु फ़-ख़ुज़ूहु, व मा नहाकुम 'अन्हु फ़न्तहू**' — जो रसूल तुम्हें **दें** उसे **ले लो**; और जिस से वो **रोकें** उस से **रुक** जाओ। ये, बेटा, **सुन्नत पर ख़ुद क़ुरआन की मुहर** है: वही किताब जिसे लोग 'अकेला' मानने का दावा करते हैं हुक्म देती है कि मुहम्मद ﷺ जो भी लाएँ उसे लो। **क़ुरआन और सुन्नत दो बटें वाली एक ही रस्सी हैं।**

वो चिराग़ जिसे अंसारी ने मंद किया

अब सूरह अज़मत की दो तस्वीरें बनाती है। पहले, ग़रीब **मुहाजिरीन** — 'अपने घरों और अपने माल से निकाले गए, अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रज़ामंदी तलब करते हुए — **यही** सच्चे हैं।' उन्होंने अपने ख़ाली किए घरों से साबित किया कि **ईमान पते से भारी है।**

और फिर मदीना के **अंसार** — और यहाँ वो आयत नाज़िल होती है जो आज भी आँखें नम करती है: 'जो उन से पहले इस घर और ईमान में बस चुके थे वो हर उस शख़्स से **मोहब्बत** करते हैं जो उनकी तरफ़ हिजरत करे, और अपने सीनों में उस चीज़ की कोई **हाजत** नहीं पाते जो उन्हें दी गई — **व यु'सिरून 'अला अन्फ़ुसिहिम व लौ कान बिहिम ख़सासह** — और वो **दूसरों को अपने आप पर तरजीह** देते हैं, चाहे ख़ुद उन्हें **फ़ाक़ा** हो।'

और इस आयत के पीछे एक रात है, बेटा, जिसे बुख़ारी और मुस्लिम ने महफ़ूज़ किया। एक मेहमान नबी ﷺ के पास आया, भूका, और घर में कुछ न था। आप ﷺ ने पूछा: कौन इसे आज रात मेहमान बनाएगा? एक अंसारी सहाबी खड़े हुए और उसे अपने घर ले गए। उन्होंने अपनी बीवी से पूछा: कुछ है? उन्होंने कहा: सिर्फ़ बच्चों का खाना।

तो उन्होंने कहा: बच्चों को किसी तरह बहला कर सुला दो। और जब मेहमान बैठ गया — **उन्होंने चिराग़ ठीक करने के बहाने उठ कर उसे बुझा दिया**, और अँधेरे में दोनों मियाँ-बीवी ऐसे मुँह हिलाते रहे जैसे खा रहे हों, ताकि मेहमान समझे कि वो भी साथ खा रहे हैं — और वो पेट भर कर खाता रहा। वो रात दोनों भूके सोए।

और सुबह जब वो नबी ﷺ के पास आए, तो आपने ﷺ फ़रमाया: **'अल्लाह तुम दोनों के आज रात के काम पर मुस्कुराया' या 'ता'अज्जुब फ़रमाया।'** और ये आयत नाज़िल हुई।

बेटा, इस पर रुक जाइए। ये सिर्फ़ सख़ावत नहीं थी — ये **ईसार** था: अपनी ज़रूरत से देना। और उससे भी बारीक बात: **उन्होंने चिराग़ बुझा दिया ताकि लेने वाले को शर्मिंदगी न हो।** देना एक दर्जा है; देते हुए दूसरे की **इज़्ज़त बचा लेना** उससे ऊपर का दर्जा है।

और फिर वो जुमला जो इस पूरी दास्तान का ताला खोलता है: '**व मंय्-यूक़ शुह्ह नफ़्सिही फ़-उलाइक हुमुल्-मुफ़्लिहून** — और जो **अपने नफ़्स की तंगी** से बचा लिया जाए, **वही** कामयाब हैं।' अंसार अमीर नहीं थे, बेटा — वो सिर्फ़ अपनी मुट्ठी से आज़ाद थे।

आपका पुल — और शैतान का जुमला

फिर, बेटा, वो आयत आती है जो **आप** को इस कहानी में शामिल करती है — क़ियामत तक के हर मोमिन के लिए लिखी हुई: 'और जो उन के **बाद** आए कहते हैं: **रब्बनग़्-फ़िर लना व लि-इख़्वानिनल्-लज़ीन सबक़ूना बिल्-ईमान** — ऐ हमारे रब, हमें **और** हमारे उन भाइयों को बख़्श दे जो ईमान में हम से आगे निकल गए — **व ला तज्'अल फ़ी क़ुलूबिना ग़िल्लल्-लिल्-लज़ीन आमनू** — और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए **कोई कीना** मत रख — रब्बना, इन्नक रऊफ़ुर्-रहीम।'

ये दुआ **सहाबा तक आपका पुल** है, बेटा — इसे याद कर लीजिए। और उसका दूसरा हिस्सा ग़ौर कीजिए: एक ऐसा दिल जो **किसी भी मोमिन** के लिए ज़र्रा भर कड़वाहट न उठाए। उलमा ने कहा: जो पहली नस्लों के साथ हिस्सा चाहता है, वो उनके दो निशान थामे — **अपने से पहलों के लिए दुआ, और हर ईमान वाले के लिए साफ़ सीना।**

इसके बर-अक्स, सूरह उन मुनाफ़िक़ों को बे-नक़ाब करती है जिन्होंने बनू नज़ीर से वादा किया था: 'अगर तुम निकाले गए, हम तुम्हारे साथ निकलेंगे' — और अल्लाह ने पेशगी गवाही दी: 'वो यक़ीनन **झूटे** हैं' — और ऐसा ही साबित हुआ। उनकी मिसाल: **शैतान**, जो इंसान से कहता है 'कुफ़्र करो!' — फिर, जब वो कुफ़्र कर लेता है, कहता है: 'मैं तुमसे बेज़ार हूँ; मैं अल्लाह से डरता हूँ, जहानों का रब।'

हर वो वसवसा डालने वाला जो तुम्हें किनारे तक धकेलता है, बेटा — नफ़्स, बुरी सोहबत, ख़ुद शैतान — सब का वही निकास-जुमला रटा हुआ है: 'मैं तो बस कह रहा था।' किनारे पर, सिर्फ़ धकेला हुआ गिरता है।

मुहासबा — और पहाड़

अब सूरह अपने सारे धागे एक शाम के होमवर्क में जमा करती है, एक ऐसी आयत जिसे उलमा **क़ुरआन की मुहासबे वाली आयत** कहते हैं: 'ऐ ईमान वालो! अल्लाह

से डरो — **वल्-तन्ज़ुर नफ़्सुम्-मा क़द्दमत लि-ग़द** — और हर जान **देखे** कि उसने **कल** के लिए क्या **आगे भेजा।**' एक सवाल, बेटा, हर रात पूछा जाए, एक पूरी ज़िंदगी दोबारा तरतीब दे दे: **आज, मैंने अपने असल पते पर क्या रवाना किया?**

और उसके बग़ल की तंबीह क़ुरआन की सबसे चुभती हुई बातों में से है: 'उन लोगों जैसे मत बनो जिन्होंने **अल्लाह को भुला दिया** — तो उसने उन्हें **उनके अपने नफ़्स भुला** दिए।' **उसे भूलने की सज़ा, बेटा, ख़ुद को भूलना है:** एक आदमी हर चीज़ में मसरूफ़, हर किसी से जुड़ा हुआ, हर बात पर अपडेटेड — सिवाए उस एक नफ़्स के जो उसके अंदर सवार क़ब्र की तरफ़ जा रहा है।

फिर, ये दिखाने के लिए कि ये नसीहत किस लायक़ है, अल्लाह एक अरब के तसव्वुर की सबसे भारी चीज़ उठाते हैं: '**अगर हम ये क़ुरआन किसी पहाड़ पर उतारते**, तो तुम उसे अल्लाह के ख़ौफ़ से **दबा** हुआ, **फटता** हुआ देखते।' चट्टान चटख़ जाती, बेटा। वो सवाल जो आयत हर पढ़ने वाले के सर पर लटका छोड़ती है: **पहाड़ फट जाता — मेरा दिल साबित कैसे है?**

नामों का हार

और फिर, बेटा, सूरह एक दम-ब-दम काम करती है। क़िलों और जिला-वतनी के बाद, माशियात और मुहासबे के बाद, ये आपकी नज़र **सब के मालिक** की तरफ़ उठाती है — और तीन इख़्तितामी आयतों में अल्लाह के नामों का सबसे क़ीमती हार पिरोती है:

'वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं: ग़ैब और हाज़िर का जानने वाला; वो **अर-रहमान, अर-रहीम** है। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं: **अल-मलिक** — बादशाह; **अल-क़ुद्दूस** — बिल्कुल पाक; **अस-सलाम** — सलामती का सरचश्मा; **अल-मुअ्मिन** — अमन देने वाला; **अल-मुहैमिन** — निगहबान; **अल-'अज़ीज़** — ग़ालिब; **अल-जब्बार** — ज़बरदस्त जो टूटे हुए को जोड़ता है; **अल-मुतकब्बिर** — सबसे बड़ा। अल्लाह उस से पाक है जो वो

शरीक ठहराते हैं। वही अल्लाह है: **अल-ख़ालिक़** — बनाने वाला; **अल-बारिअ** — वुजूद में लाने वाला; **अल-मुसव्विर** — हर चेहरे की सूरत गढ़ने वाला। **लहुल्-अस्मा-उल्-हुस्ना** — उसी के लिए सबसे **ख़ूबसूरत नाम** हैं।'

डिज़ाइन गिनिए, बेटा: सूरह हर चीज़ के उसकी तस्बीह करने से **खुली**, और हर चीज़ के उसकी तस्बीह करने पर **ख़त्म** होती है — और बीच में, उसने आपको दिखाया **क्यों**: **नाम अमल में।** अल-'अज़ीज़ ने क़िला तोड़ा; अल-मलिक ने फ़य्अ तक़सीम किया; अस-सलाम ने अंसार के घरों को नरम किया; अल-मुहैमिन ने मुनाफ़िक़ों के पोशीदा वादे सुने।

बहुत से सलफ़ इन इख़्तितामी आयतों को फ़ज्र के बाद पढ़ना पसंद करते थे, ये हार पहने हुए दिन में दाख़िल होते। इसे अपनी आदत भी बनाइए — और जब आप कोई नाम जान लें, बेटा, **उसे पुकारिए**: टूटे हुए? **अल-जब्बार** को पुकारो। डरते हो? **अल-मुअ्मिन** को पुकारो। बे-चैन? **अस-सलाम** को पुकारो। **नाम कोई फ़ेहरिस्त नहीं जो दीवार पर लगाई जाए; ये दरवाज़े हैं, और हर दरवाज़ा खुलता है।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. उस दीवार का हिसाब लो जिसपर तुम चुपके से टिकते हो — अपने ताले और मंसूबे रखो, मगर अपना तवक्कुल दीवारों के रब में रखो।

2. माल की कशिश से लड़ो: यूँ दो कि पैसा कभी 'अमीरों के दरमियान घूमता चक्कर' न बने — तुम्हारा सदक़ा तहज़ीब की नल-बंदी है।

3. 'जो रसूल तुम्हें दें उसे ले लो' — क़ुरआन और सुन्नत को एक ही रस्सी थामो।

4. अंसारी अंदाज़ में ईसार करो: अपनी ज़रूरत से दो, और **चिराग़ मंद कर दो** — लेने वाले की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करो।

5. 'रब्बनग़्-फ़िर' वाली दुआ पढ़ो और ऐसा सीना रखो जिसमें किसी मोमिन के लिए ज़र्रा भर कीना न हो।

6. हर रात का मुहासबा चलाओ — 'मैंने कल के लिए क्या आगे भेजा?' — और

अल्लाह को भूलना कभी अपने नफ़्स को भूलना मत बनने दो।

7. इख़्तितामी नाम सीखो और हर एक को ज़रूरत से पुकारो: टूटे हुए के लिए अल-जब्बार, बे-चैन के लिए अस-सलाम, डरने वाले के लिए अल-मुअ्मिन।

या मलिक, या क़ुद्दूस, या सलाम, या जब्बार — हमें जोड़ दीजिए, हमें अमन दीजिए, हमें पाक कीजिए, और हमारे दिलों को अपनी किताब से यूँ चाक कर दीजिए जैसे पहाड़ चाक होते। आमीन।